जैनेन्द्र (1905)

जैनेन्द्र गाँधीवाद के अध्यात्म पक्ष पर बल देते हुए आत्म-पीड़न के द्वारा हृदय-परिवर्तन में विश्वास करते हैं। उनके अनुसार मानव में दो मूल प्रवृत्तियाँ हैं-स्पर्धा और समर्पण स्पर्धा अहं का सृजन करती है। समर्पण-वृत्ति 'स्व' को 'पर' के लिए उत्सर्ग कर देने में अपनी सार्थकता अनुभव करती है। जैनेन्द्र ने 'अंह' की निस्सारता दिखाकर समर्पण द्वारा 'स्व' और 'पर' में अभेद स्थापित करने की चेष्टा की है। जैनेन्द्र कुमार ने निम्नलिखित उपन्यासों की रचना की है-

परख (1929)- इस उपन्यास में प्रेम के आदर्शीकरण को प्रस्तुत किया गया है। इसमें पात्रों के मानसिक द्वन्द्वों का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण किया गया है। इसमें तीन पात्र हैं, सत्यधन, बिहारी कट्टो और गरिमा 'सत्यधन' के चरित्र द्वारा लेखक ने ढोंगी आदर्शवादीयों का पर्दाफाश किया है, जो सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का बीड़ा उठाते हैं, परन्तु धन के लालच में तथा सामाजिक मानकों एवं मान्यताओं के कारण समाज के आगे घुटने तक टेक देता है। वह कहता है। 'मैं कैसे कर सकता हूँ? तुम जानते हो, हो सकता है। मेरे सम्बन्ध में यह शुद्ध परमार्थ का काम न हो।' "डॉ. देवराज उपाध्याय ने 'परख को रिएक्शन फॉरमेशन का उपन्यास कहा है।

• **सुनीता (1934)**- इस उपन्यास में श्रीकान्त, सुनीता एवं हरिप्रसन्न के मनोभावों का विश्लेषण किया गया है।

त्याग-पत्र (1937) - इस उपन्यास में स्त्री के विद्रोही व्यक्तित्व का चित्रण है। मुख्य पात्र मृणाल, प्रमोद है।

कल्याणी (1939) - उपन्यास में विवाह के पश्चात् की समस्याओं का चित्रण किया गया है।

• **सुखदा (1952)** - इसमें इन्होंने 'सुनीता' के पात्रों को ही लिया है। 'सुखदा', श्रीकान्त, हरिप्रसन्न है। साथ ही सुखदा के मानसिक द्वन्द्वों का चित्रण किया है।

विर्त्तत (1953) - इस उपन्यास में भुवहन मोहिनी और जितेन की प्रेम कथा का चित्रण किया है। आर्थिक विषमता में अन्तर होने के कारण 'जितेन' और भुवहन मोहिनी का विवाह नहीं हो पाता है।

व्यतीत (1953) - इस उपन्यास में अनिता और जितने के माध्यम से प्रेम कुष्ठा तथा नारी के त्याग के चित्रों को प्रकट किया है।

जयवर्द्धन (1956)- इस उपन्यास में दो सूत्रों के माध्यम से कथा चलती है, व्यक्तिगत और राजनैतिक इस उपन्यास के मुख्या पात्र है, 'जयवर्द्धन' और 'इला' इसमें व्यक्ति की निजता तथा सामाजिक द्वन्द्व का चित्रण है।

• मुक्ति बोध (1965)- इस उपन्यास में जैनेन्द्र ने एक राजनैतिक नेता की मानसिक मनोवृत्तियों का चित्रण किया है। मुख्य पात्र-राजेश्वरी, नीलिमा।

अन्नतर (1968)- इस उपन्यास में जैनेन्द्र ने पुरुष-स्त्री के हिंसा-अहिंसा, काम, बह्मचर्य बुद्धि-श्रद्धा आदि द्वन्द्व की चर्चा की है। उपन्यास की मुख्य पात्र 'अपराजिता' है।

अनाम स्वामी (1974) - मानव के धार्मिक रुढ़ियों से मुक्त होने का चित्रण किया है। मुख्य पात्र कुमार, वसुधरा, शंकर।

• दर्शाक (1985) - दर्शाक में विवाह विच्छेद की समस्या को उठाया है। साथ ही वेश्या वृत्ति की समस्या को भी उठाया है। 'सरस्वती के रंजना' बनने की स्थिति का चित्रण किया है।

इलाचन्द्र जोशी (1902)

इलाचनद्र जोशी मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकार है। इनके प्रमुख उपन्यास निम्न हैं-

- घृणामयी 1929-एक युवती के पश्चाताप का चित्रण है। सन् 1950 में यह उपन्यास 'लज्जा' शीर्षक से प्रकाशित हुआ।

सन्यासी- यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखा गया है। उपन्यास के नायक नन्द किशोर की आत्मविश्लेषणात्मक शैली के माध्यम से वर्णन किया गया है। उपन्यास का नायक सन्यासी बन जाता है और वह अपना जीवन देश की सेवा में लगा देता है।

- **पर्दे की रानी (1942)** - मानसिक विकृतियों के व्यक्तियों के चरित्र की मनोवैज्ञानिक व्याख्या की है। उपन्यास की नायिका 'रंजना' खूनी पिता और वेश्या माता की पुत्री है।

यशपाल (1903)

प्रेमचन्द के बाद अगर किसी लेखक ने जीवन का इतना सर्जग यथार्थ चित्रण किया है तो वे यशपाल है।

- दादा कामरेड (1941) देशद्रोही (1943) दिव्या (1945) पार्टी कामरेड (1946) मनुष्य के रूप में (1949) अमिता (1955) झूठा सच (1958) सुबह के घंटे (1962) अप्सरा का शाप (1965) क्यों फंसे (1968) मेरी-तेरी उसकी बात (1974)
- **दादाकामरेड (1941) -** यह यशपाल का पहला उपन्यास है। इस उपन्यास में दलित शोषित वर्ग के चित्रण के साथ मजदूरों की अर्थात् मजदूर संगठन की आवश्यकताओं को उजागर किया है।

नोट - उपन्यास का पात्र हरीश कहता है कि भाईयों ये मिलें तुम्हारे खून पसीने की मेहनत से बनाई गई है। तुम्हारे बिना ये मिलें एक मिनट नहीं चल सकती है।

मेरे तेरी उसकी बात (1974) - मेरे तेरी बात उपन्यास यशपाल का एक महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास में उन्होंने नई और पुरानी पीढ़ी के विचारों को प्रकट किया है। पहली पीढ़ी इसमें एक हिस्से में राजनैतिक कथा है तथा दूसरे भाग में नारी शोषण की कथा कही गई है।

• **देश द्रोही (1943)** - यह यशपाल का दूसरा उपन्यास है। यह उपन्यास साम्यवादी विचारधारा में लिखित उपन्यास है। यह एक ऐसे अभागे व्यक्ति की कहानी है। जिसे जीवन के हर मोड़ पर निराशा झेलनी पड़ती है।

• **द्विव्या (1945)** - यह उपन्यास यशपाल का ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि को आधार बनाकर लिखा गया है। इस उपन्यास में बौद्ध कालीन परिवेश की कथा को आधार बनाया है।

पार्टी कामरेड (1947) - यह 1946 में लिखित यशपाल का सामाजिक तथा राजनैतिक उपन्यास है।

• **मनुष्य के रूप में (1949)** - यह सामाजिक, राजनैतिक उपन्यास है इस उपन्यास में उन्होंने मनुष्य के संदर्भ में कहा है, कि मनुष्य के कितने रूप हो

सकते हैं तथा वह हर परिस्थिति में अपने हर एक रूप दिखाता है। इस उपन्यास के केन्द्र बिन्दु में 'सोमा' है। भूषण का 'सोमा' के प्रति अनेक रूप तथा चेहरे है। इसी चित्रण किया गया है। साथ-साथ सोमा को कितनी ज्यादा पुरुषवासना का शिकार होना पड़ता है। इसका चित्रण इस उपन्यास में किया है।

अमिता (1955) - यह उपन्यास इतिहास के प्रसिद्ध अख्यान पर आधारित है। इसमें एक ऐसी नन्हीं बालिका की कथा है, जिसके कोमल मन पर अपनी माँ के अमिट संस्कारों की छाप है तथा उसके आगे क्रूर, प्रचण्ड अशोक भी अपने घूटने टेक देता है।

झूठा सच (1958)- 'झूठा सच' यह उपन्यास यशपाल का बेहद प्रसिद्ध उपन्यास है। इस उपन्यास को दो खण्डों में विभाजित किया गया है तथा यह दो भागों में प्रकाशित हुआ था। प्रथम भाग (1958) 'वतन और देश' के शीर्षक से तथा दूसरा भाग (1960) 'देश के भविष्य' नाम से प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास को खबरों की कत्तरन और महाकाव्य की संज्ञा दी गई है। इसके प्रथम भाग में देश के विभाजन से पहले की घटनाओं को केन्द्र बनाकर लिखा गया है।

रांगेय राघव (1923-1963)

रांगेय राघव ने बहुत से उपन्यास लिखे हैं, जो इस प्रकार है-

- घरौंदे (1946) - यह उपन्यास परिसर (विश्वविद्यालय) जीवन पर लिखा गया हिन्दी का प्रथम उपन्यास है।
- विषाद मठ (1946) - यह उपन्यास बंगाल के अकाल पर आधारित है।
- मुर्दों का टीला (1948) - इस उपन्यास में सिन्धु घाटी सभ्यता की कथा का चित्रण है।
- चीवर (1951)- हर्षकालीन बौद्ध धर्म के उत्थान का चित्रण किया गया है।
- सीधा-साधा रास्ता (1951)

- **प्रतिदान (1950)** - महाभारत युग के ब्राह्मण एवं क्षत्रिय के संघर्ष का चित्रण है।
- **अँधेरे के जुगनू (1953)** - दास प्रथा को बचाये रखने के लिए कुलीन वर्ग के प्रयत्न का चित्रण।
- **कब तक पुकारूँ (1957)** - जरायम पेशा करनट जाति के जीवन के यथार्थ से सम्बन्धित है।
- **बन्दुक और बीन (1958)** - युद्ध की समस्या और उसकी सार्थकता पर विचार किया गया है।

फणीश्वरनाथ रेणु (1921-1977 ई.)

फणीश्वरनाथ 'रेणु' आंचलिक उपन्यासकार है। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं-

- **मैला आँचल (1954)** - पूर्णिया जिले के मेरीगंज गाँव की कथा।
- **परती परिकथा (1957)** - पूर्णिया जिले के परानपुर गाँव की कथा।
- **दीर्घतपा (1963)** - भ्रष्ट व्यवस्था के बीच एक ईमानदार व्यक्ति के संघर्ष की कहानी।
- **जुलूस (1965)** - पूर्वी पाकिस्तान से आए पूर्णिया जिले में शरणार्थियों की समस्या का चित्रण।
- **कितने चौराहे (1966)** - बालक एवं मनमोहन को केन्द्र में रखकर स्वाधीनता आन्दोलन का चित्रण।

- पल्टू बाबू रोड (1979) - पूर्णिया जिले के एक बंगाली परिवार के चारित्रिक पतन की कहानी।
- राम रतन (1971) - अपूर्ण उपन्यास।

श्रीलाल शुक्ल

श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में राजनीति, व्यंग्य एवं आंचलिकता को मिश्रण है, इनके प्रमुख उपन्यास निम्नांकित हैं-

- **सूनी घाटी का सूरज (1957)** - प्रतिभाशाली उच्चवर्गीय निर्धन छात्र की संघर्ष गाथा है।

- **अज्ञातवास (1962)** - एक व्यक्ति का अपनी पत्नी के प्रति क्रूर व्यवहार एवं पश्चाताप का चित्रण।
- **रागदरबारी (1968)** - शिवपागंज गाँव की जिन्दगी का यथार्थ चित्रण किया।
- **सीमाएँ टूटती हैं (1973)** - अपराध एवं रोमांस मिश्रित एक कहानी है।
- **मकान (1976)** - संगीतज्ञ 'बाबू' का मकान के लिए अफसरों की खुशामद का चित्रण।
- **पहला पडाव (1976)** - भवन बनाने वाले मजदूरों के शोषण का चित्रण।
- **विश्रामपुर का संत (1998)** - राजनीतिक पुरुषों के पाखण्ड का चित्रण।

रामदरश मिश्र

रामदरश मिश्र एक आंचलिक उपन्यासकार हैं, इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्न हैं-

- **पानी के प्राचीर (1961)** - गोरखपुर जिले के पाण्डेपुखा गाँव के किसानों के जिन्दगी का यथार्थ चित्रण।
- **जल टूटता हुआ (1969)** - स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद के ग्रामीण जीवन का यथार्थ अंकन।
- **बीच का समय (1970)** - अनमेल विवाह की त्रासदी एवं तनाव का चित्रण।

- सूखता हुआ तालाब (1972) - नैतिक रूढ़ियों के बन्धन में जकड़े हुए गाँव का चित्रण।
- अपने लोग (1976) - गोरखपुर की कस्बाई एवं ग्रामीण जीवन का मिश्रित चित्रण।
- रात का सफर (1976) - नायिका 'ऋता' की ट्रेन यात्रा का चित्रण।

  आकाश की छत (1979) - बाढ़ की विभीषिका से घिरे मनुष्य की मानसिकता का अंकन।
- बिना दरवाजे का मकान (1984) - नायिका दीपा के जीवन संघर्ष और अपराजेय जिजीविषा का अंकन।

- दूसरा घर (1986) - प्रवासी कमलेश के जीवन यथार्थ एवं संघर्ष का चित्रण।
- थकी हुई सुबह (1993) - एक ग्रामीण नारी की कहानी।
- बीस बरस (1996) - रिपोर्ताज शैली में लिखा उपन्यास।

मन्नू भण्डारी

आपका बण्टी (1971 ई.), महाभोज (1979 ई.) के बल पर अक्षय ख्याति अर्जित की है।

आपका बण्टी - मन्नू भण्डारी 'आपका बंटी' आज के परिवेश में लिखा गया एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास हैं। आधुनिक परिवेश में उत्पन्न संकटबोध और मूल्य बोध को इस उपन्यास में चित्रित किया गया है। मन्नू भण्डारी ने इस औपन्यासिक कृति के माध्यम से एक ओर पारम्परिक मूल्यों को नकारने की चेष्टा की है तो दूसरी ओर आधुनिकता की चुनौती का साक्षात्कार संवेदना के धरातल पर किया है। मुख्य पात्र; शकुल (माता), अजय (पिता), मीरा एवं डॉक्टर साहब आदि है।

- **महाभोज-** यह एक राजनीतिक उपन्यास है। इसका परिवेश वैयक्तिक या पारिवारिक न होकर सामाजिक है। मुख्य पात्र; 'बिसेसर', दा साहब और 'सुकुल बाबू' है।

चन्द्रकान्ता

अर्थान्तर (1981 ई.), अंतिमसाक्ष्य, (1981 ई.), बाकी सब खैरियत हैं (1983 ई.), ऐलान गली जिन्दा हैं। (1984 ई.), यहाँ वितस्ता बहती हैं (1992 ई.), अपने अपने कोणार्क (1995 ई.) कथासतीसर (2001 ई.) आदि। इन्होंने अपने उपन्यासों में आधुनिक मध्यवर्गीय परिवारों के विघटन तथा पारम्परिक मूल्यों एवं नयी मानसिकता के बीच उभरने वाले अन्तर्विरोधों का बड़ा ही सजीव चित्रण किया है।

- **कथा सतीसर-** इसकी की मूल कथा 1931 ई. से 2000 ई. की कालावधि तक सीमित है, इस उपन्यास में कश्मीर को उसके समस्त पौराणिक-ऐतिहासिक सन्दर्भ में उपस्थित किया गया है। मुख्य पात्र-सुल्तान जैनुल आब्दीन, कार्तिकेय एवं काव्या आदि।
- **अपने-अपने कोणार्क -** में 'कुनीं' नामक एक आधुनिक शिक्षिका की कहानी हैं।

चित्रा मुद्गल

चित्रा मुद्गल ने विज्ञापन जगत् में होने वाले नारी-शोषण को सार्थक और औपन्यासिक परिणति देकर एक सफल उपन्यास लेखिका के रूप में अपने को स्थापित कर लिया है। इनके द्वारा लिखित उपन्यास है।

- **एकजमीन अपनी (1990 ई.)**- इनका चर्चित उपन्यास है। इस- उपन्यास में विज्ञापन जगत की सच्चाईयों को उजागर किया गया है। मुख्य पात्र; अंकिता एवं नीता है।

आवाँ (1999 ई.)- यह उपन्यास बम्बई के मजदूर संघत्नों के जीवन को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। उपन्यास के अन्त में उद्धृत 'पाश' की यह कविता-

हम लड़ेंगे, जब एक दुनिया में
लड़ने की जरूरत बाकी है।
हम लड़ेंगे कि लड़े बगैर
कुछ नहीं मिलता।

नासिरा शर्मा

नासिरा शर्मा ने एक प्रगतिशील मानवधर्मी लेखिका के रूप में अपनी पहचान बनायी है। इनके नौ उपन्यास हैं-

'सात नदियाँ एक समुन्दर (1984 ई.), शाल्मली (1987 ई.), ठीकरे की मँगनी (1989 ई.), जिन्दा मुहावरे (1993 ई.), अक्षय वट (2003 ई.), कुइयाँजान (2005 ई.), जीरो रोड (2008 ई.), परिजात (2010 ई.), अजनबी जजीरा (2012 ई.)।

- **सात नदियाँ: एक समुन्दर** - इस उपन्यास में लेखिका ने धार्मिक तानाशाही के दबाव में पिसती हुई ईरान की कथा कही है।
- **शाल्मली** - शाल्मली में लेखिका ने एक सुशिक्षिता और केन्द्रीय सरकार की सेवा में प्रथम श्रेणी की पदाधिकारी पत्नी और किसी सरकारी दफ्तर में

सेक्शनल ऑफिसर के रूप में कार्यरत हीन-भावना ग्रस्त पति के बीच उभरने वाले पारिवारिक तनावों और विसंगतियों का चित्रण किया गया है।

- **ठीकरे की मंगनी**- इस उपन्यास में रूढ़ियों में जकड़े एक मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवार की शिक्षित और संवेदनशील युवती 'महरूख' की संघर्ष कथा है।
- **जिन्दा मुहावरे**- जिन्दा मुहावरे उपन्यास में देश के बँटवारे की भयंकर त्रासदी को केन्द्र में रखकर लिखा गया है।
- **अक्षयवट**- की पूरी कथा 'इलाहाबाद' शहर को केन्द्र में रखकर लिखी गई है। इलाहाबाद का जीवन द्वन्द्वात्मक है। एक ओर तो उसके पास उदात मानवीय मूल्यों की विरासत है, दूसरी ओर वर्तमान जीवन व्यवस्था की विकृतियों का चित्रण है।

- **कुइयाँ जान** - इस उपन्यास में लेखिका ने अनेक छोटे-बड़े कथा सूत्रों के. माध्यम से आधुनिक टेक्नोलॉजी के बढ़ते प्रभाव के कारण क्रमशः निरन्तर छीजते जलस्त्रोतों की समस्या पर गम्भीरता से विचार किया है।

मैत्रेयी पुष्पा

महिला कथा-लेखिकाओं में मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी रचनाओं की ताजगी और ऊष्मा से सहसा हिन्दी-जगत् का ध्यान आकृष्ट कर लिया है। 'स्मृतिदंश (1990 ई.), बेतवा बहती रही (1993 ई.), इदनमंनम (1994 ई.) चाक (1997 ई.), झूला नट (1999 ई.), अल्मा कबूतरी (2000 ई.), अगन पाखी (2001 ई.), विजन (2002 ई.), कहे ईसुरीफाग (2004 ई.), त्रिया हठ (2005 ई.) तथा 'गुनाह बेगुनाह' (2011 ई.) आदि।

इदन्नमम् - इस उपन्यास में नारी चेतना को व्यापक सामाजिक परिवेश को उभारा गया है। यहाँ देश के स्वतंत्र होने के बाद का पूरा सामाजिक यथार्थ अपने अन्तर्विरोधों के साथ विद्यमान है। सामन्तीय संस्कारों में रचे-बसे परिवार, आर्थिक प्रलोभनों के चलते, दरकते हुए पारिवारिक रिश्ते, भ्रष्ट राजनीति, नौकर शाही का अमानवीय चरित्र, नये नेता और शो शोषण के नये तरीके वोट की राजनीति, जातीय समीकरण, हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्धों में खटास, आरक्षण की राजनीति, असन्तुलित विकास-योजनाये और चरित्र के संकट के चलते उनकी इन सारे जीवन संदर्भों की सघनता का चित्रण किया गया है।

मुख्य पात्र; **मंदा, मकरन्द एवं महेन्दर** आदि है।

चाक- चाक उपन्यास में लेखिका ने बुन्देलखण्ड से बाहर आकर ब्रज-क्षेत्र के जीवन यथार्थ को चित्रित किया है। मुख्य पात्र-सांरग, रंजीत, श्रीधर आदि।

- **झूलानट**-यह एक छोटा उपन्यास है। इसमें 'बुन्देलखण्ड' के एक ग्रामीण परिवार की कथा है।
- **अल्माकबूतरी** - 'अल्माकबूतरी' उपन्यास में 'कबूतरा' जाति की कथा मात्र नहीं है वह समकालीन राजनीति की दिशाहीनता, अपराधीकरण सत्ता-संघर्ष, बेरोजगारी तथा जीवन-मूल्यों के घोर पतन की यथार्थ गाथा भी है।

- **विजन** - इस उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने गाँव से हटकर महानगरों में नेत्र-चिकित्सा के पेशो से जुड़े डाक्टरों की जिन्दगी का सच उजागर किया है।
- **कही ईसुरी फाग**-ईसुरी फाग बुन्देलखण्ड में प्रसिद्ध हैं। इसमें ईसुरी की रजऊ की प्रेम कथा वर्णित है।
- **त्रिया हठ**-उपन्यास के केन्द्र में 'उर्वशी' नामक विधवा लड़की की कहानी है।